गुप्त-राजवंश

असि० प्रो० डॉ० संदीप कुमार
इतिहास विभाग
बी० एम० कॉलेज, रक्सिया, मधुबनी
मो०- 8051796740

दिनांक

गुप्त साम्राज्य का उद्भव एवं विकास

स्रोत :—

साहित्यिक स्रोत – विष्णु पुराण, वायु पुराण, ब्रह्माण्ड पुराण
– विशाखदत्त की रचना देवीचन्द्रगुप्तम्
– शूद्रकृत मृच्छकटिकम
– वात्स्यायन की रचना कामसूत्र
– कालिदास की रचनायें
– फाह्यान की रचना फो-क्यो-की } विदेशी साहित्य
– ह्वेनसांग की रचना सी-यू-की

देशी साहित्य

पुरातात्विक स्रोत – समुद्रगुप्त का प्रयाग-प्रशस्ति लेख, उ०प्र०
चन्द्रगुप्त II विक्रमादित्य का– मेहरौली स्तम्भ लेख, दिल्ली
मथुरा अभिलेख, उ०प्र०
कुमार गुप्त प्रथम का बिलसंड अभिलेख, उ०प्र०
स्कन्धगुप्त का भितरी स्तम्भ अभिलेख, उ०प्र०
मन्दसौर प्रशस्ति लेख (रेशम-बुनकर संघ का), म०प्र०
भानुगुप्त का ऐरण अभिलेख, म०प्र०

सिक्का – बयाना, राजस्थान से प्राप्त

स्मारक – मंदिर – भूमरा का शिव मंदिर
तिगवाँ (जबलपुर, म०प्र०) का विष्णु मंदिर
नचना-कुठार (म०प्र०) का पार्वती मंदिर
देवगढ़ (झाँसी) का दशावतार मंदिर
भितरगाँव (कानपुर) का मंदिर
लाड़खान (ऐहोल) का मंदिर
गुफा चित्र – बाघ (लौकिक जीवन के चित्र), ग्वालियर म०प्र०
अजन्ता (16वाँ, 17वाँ चित्र) धार्मिक, महाराष्ट्र

उत्पत्ति तथा मूल निवास स्थान – इतिहासकारों के बीच एक अवधारणा का अभाव

गुप्त वंश की स्थापना – श्रीगुप्त के द्वारा, 275 ई० में } दोनों के ही कोई अभिलेख/सिक्के
घटोत्कच्छ – श्रीगुप्त का उत्तराधिकारी } अनुपलब्ध

चन्द्रगुप्त प्रथम – 319 ई० – 350 ई० (घटोत्कच्छ का उत्तराधिकारी).
– ने लिच्छवी राजकुमारी कुमारदेवी के साथ विवाह किया,
– ने 319 ई० में गुप्त-संवत् की शुरुआत की
– को गुप्त साम्राज्य का वास्तविक संस्थापक कहा जाता है

समुद्रगुप्त – 350 ई० – 375 ई० (चन्द्रगुप्त प्रथम का उत्तराधिकारी)
– के जानकारी के लिये स्रोत - प्रयाग प्रशस्ति लेख (रचनाकार - हरिषेण)
– को लिच्छवी दौहित्र (लिच्छवी राजकुमारी से उत्पन्न) कहा जाता है
– के सिक्के – गरुड़ प्रकार, धनुर्धारी प्रकार, परशु प्रकार, अश्वमेध प्रकार, व्याघ्रहनन प्रकार, वीणावादन प्रकार
– ने आर्यावर्त के क्रमशः प्रथम तथा द्वितीय युद्ध में आर्यावर्त के नौ राजाओं (रुद्रदेव, मतिल, नागदत्त, चन्द्रवर्मा, गणपतिनाग, नागसेन, अच्युत, नन्दि, बलवर्मा) को पराजित किया तथा उनके साथ 'प्रसभोद्धरण' की नीति अपनाई।
– ने दक्षिण भारत के 12 शासकों ~~के संघ~~ को पराजित किया तथा उनके साथ ग्रहणमोक्षानुग्रह की नीति अपनाई। ग्रहण – शत्रु पर अधिकार, मोक्ष – शत्रु को मुक्त करना तथा अनुग्रह - शत्रु पर दया कर राज्य को लौटा देना। इस प्रकार समुद्रगुप्त ने दक्षिण के अपने शत्रुओं को पराजित कर उसे पुनः उसका राज्य लौटा दिया।
– ने शक, कुषाण तथा मुरुण्ड (विदेशी शक्तियों) को पराजित किया और उसके साथ आत्मनिवेदन (सम्राट के समक्ष स्वयं हाजिर होना), कन्योपायन (अपनी पुत्रियों का गुप्त राजाओं से विवाह करना), तथा गुरुत्मदंक (शासनादेश प्राप्त करना) की नीति अपनाई।
– ने आटविक जाति तथा उत्तर-पूर्वी सीमा पर स्थित समतट, डवाक, कामरूप, कर्तृपुर तथा नेपाल क्षेत्र के शासकों को भी पराजित किया था।
– के समकालीन लंका नरेश मेघवर्मन ने अपना एक दूत मंडल समुद्रगुप्त के दरबार में भेजा था साथ ही समुद्रगुप्त की अनुमति से गया में बौद्धों के लिये एक विहार निर्मित करवाया था।
– ने अश्वमेध यज्ञ किया था। उसके दिग्विजय का उद्देश्य धरणिबन्ध (सम्पूर्ण